ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-24 मार्च-II, 2016 पाक्षिक माउण्ट आबू ` 8.00

ज्ञान नेत्र का दान ही सबसे बड़ा दान

सेवा प्रभाग द्वारा 'न्यू डायमेन्शन इन सोशल सर्विस' विषय पर आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन

ओ.आर.सी.-गुड़गाँव। खुशियाँ बटोरने से नहीं बल्कि बांटने से मिलती हैं, जब साधना और साधनों का सही समागम होता है तभी समाज सही दिशा में विकास कर सकता है। उक्त विचार जे.सी.वर्मा, डिस्ट्रिक्ट गवर्नर, लायंस क्लब ने समाज सेवा प्रभाग द्वारा `न्यू डायमेन्शन इन सोशल सर्विस' विषय पर आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के अवसर पर बोलते हुए व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि जब मैंने इस प्रांगण में पहला ही कदम रखा, तभी मेरे मन में एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार शुरु हो गया।

रोट्री क्लब के पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर, डॉ. के.के. जोहरी ने अपने सम्बोधन में कहा कि समाज सेवा में आध्यात्मिक मूल्य बहुत आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि आज समाज सेवा के क्षेत्र में बहुत संस्थाएं कार्य कर रही हैं लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही सेवाएं सबसे भिन्न हैं। यहाँ पर वो शिक्षा दी जाती है जो कहीं नहीं है।

ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. सन्तोष बहन ने बताया कि वर्तमान समय समाज में लोगों के मनोबल को बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है, जो कि आध्यात्मिक जागृति के द्वारा ही संभव हो सकता है। समाज के परिवर्तन के लिए पहले स्वयं का परिवर्तन करना आवश्यक है।

सम्मेलन के दौरान मंचासीन हैं बायें से दायें ब्र.कु. अमीरचन्द, ब्र.कु. संतोष, डिस्ट्रिक्ट गवर्नर जे.सी. वर्मा, ब्र.कु. आशा व ब्र.कु. सुंदरी।

उन्होंने कहा कि आज हम स्थूल नेत्रों का दान तो करते हैं लेकिन हमें अब ज्ञान के तीसरे नेत्र का दान करना होगा, तभी समाज को सही उद्देश्य प्रदान कर सकते हैं।

ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि आज समाज में जितनी भी बुराइयाँ हैं, उन सबका निराकरण मात्र आध्यात्मिक सशक्तिकरण के द्वारा ही हो सकता है। आध्यात्मिक शक्ति हमारे मन को मज़बूत बनाती है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता हमें दाता बनाती है, जितना हम दूसरों को देते हैं, उतना ही खुशी का संचार हमारे भीतर होता है।

समाज सेवा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. अमीरचन्द ने कहा कि वर्तमान में समाज सेवा प्रभाग का मुख्य उद्देश्य समाज में गिरते हुए मूल्यों की पुनः स्थापना करना है। ब्र.कु. सुन्दरी ने कहा कि वास्तव में सन्तोष ही सबसे बड़ा धन है। जीवन में ज्ञान, गुण और शक्तियों का संचय करना ही सबसे महत्वपूर्ण पूंजी जमा करना है। दिल्ली खानपुर सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. आशा ने सभी को योग की गहन अनुभूति करवाई। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. रजनी ने किया।

क्षमा भाव रखने से ही बनता जीवन सरल

दूसरों को आगे रखना ही स्वयं को आगे बढ़ाना है। वर्तमान समय समाज में सबसे बड़ी बीमारी असुरक्षा का भाव है, जिसके कारण चीज़ों को पकड़ कर रखने की आदतें बढ़ती जा रही हैं। एक-दूसरे पर विश्वास कम हो गया है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ की वरिष्ट राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. शिवानी ने **'सुखमय समाज के लिए हमारा दृष्टिकोण'** विषय पर बोलते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि कोई भी परिवर्तन अचानक नहीं आता, उसकी शुरुआत किसी एक को ही करनी पड़ती है। इसी प्रकार सुखमय समाज के लिए हमें स्वयं को ज़िम्मेदार बनाना होगा। उन्होंने कहा कि हमारा मन बहुत शक्तिशाली है, हम चाहें तो किसी बात को समाप्त भी कर सकते हैं, हमें वर्तमान में जीना होगा।

अनेक लोगों ने रक्तदान द्वारा भी दर्शाया समाज के प्रति अपना सेवाभाव

कार्यक्रम में 1000 से भी अधिक समाज सेवकों ने लिया भाग

पैनल डिस्कशन का भी हुआ आयोजन

पैनल डिस्कशन जिसमें ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. चन्द्रा, डॉ. बी.पी. शाह एवं ब्र.कु. ओंकार सम्मिलित थे। ब्र.कु. गीता ने प्रश्नों के उत्तर देते हुए कहा कि आज सम्बन्धों में मात्र औपचारिकताएं रह गई हैं। ज़्यादातर सम्बन्ध स्वार्थपूर्ण हो गये हैं। उन्होंने कहा कि सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिए सदा दातापन की भावना ज़रूरी है। जितना ही सम्बन्धों में आत्मिक दृष्टिकोण बनाये रखते हैं, उतना ही स्नेह और सहयोग बढ़ता है। उन्होंने कहा कि हम अपनी बात तो सुना देते हैं, लेकिन दूसरे की बात को ठीक से नहीं सुनते। जितना हम सबको सम्मान देते हैं, उतना ही सम्मान के पात्र बनते हैं। रोट्री क्लब के सौजन्य से रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें अनेक लोगों ने रक्तदान किया।

महापरिवर्तन की यादगार महाशिवरात्रि का उत्सव

छत्तरपुर। नारी ही देवी दुर्गा, सरस्वती का रूप है, जिसका जीता जागता उदाहरण ये ब्रह्माकुमारी बहनें हैं। उक्त विचार विधायक श्रीमती ललिता यादव ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा महाशिवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

ब्र.कु.अवधेश,अध्यक्षा,ब्रह्माकुमारीज़ भोपाल ज़ोन ने कहा कि वर्तमान भौतिकतावादी युग की पीढ़ी सुसंस्कारित नहीं है इसलिए सभी मानव मात्र को श्रेष्ठ कर्मों व संस्कारों की शिक्षा देने स्वयं परमशिक्षक शिव धरा पर अवतरित हुए हैं। अज्ञान अंधकार से घिरी मनुष्य आत्माओं को ज्ञान का दिव्य चक्षु देने का कर्त्तव्य कर रहे हैं। कलियुगी सृष्टि को सतयुगी सृष्टि में परिवर्तन के लिए परमात्मा शिव का अवतरण महाशिवरात्रि पर्व के रूप में मनाया जाता है।

कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अवधेश।

ज्ञानामृत पत्रिका की सह संपादिका ब्र.कु.उर्मिला ने कहा कि माता-पिता व परिवार ही बच्चे की प्रथम पाठशाला है इसलिए माता-पिता का यह दायित्व है कि वे स्वयं श्रेष्ठ कर्मों की कला समझकर बच्चों को सिखाएं।

गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम अंकित कराने वाली ब्र.कु. रानी ने अपने बालों से बस को खींचकर सभी को आश्चर्य चकित कर दिया। उन्होंने बताया कि यह राजयोग के नियमित अभ्यास से प्राप्त मनोबल का कमाल है।

ब्रह्माकुमारी बहनों ने `बेटी बचाओ' शीर्षक पर एक मार्मिक नाटिका प्रस्तुत कर सभी के मन को इस समस्या के प्रति जागृत कर दिया। स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु.शैलजा ने कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन किया।